REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

धूमिल और नामदेव ढसाळ के काव्य की भाषा

आनंदा मारुती कांबळे
सहाय्यक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग, आनंदीबाई रावराणे कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
वैभववाडी, जि. सिंधूदूर्ग, महाराष्ट्र, 416810.

गोषवारा:

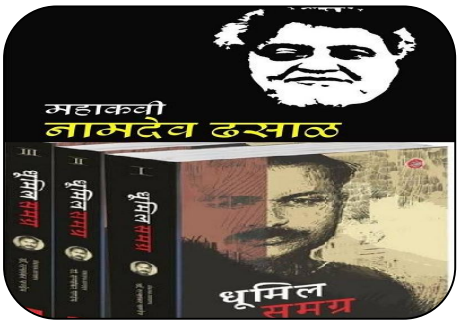

धूमिल और नामदेव ढसाल ने अपनी कविताओं के माध्यम से बेरोजगारी, गरीबी, सामाजिक कुरीतियों, महिलाओं का रवैया, दलितों की स्थिति, ग्रामीण जीवन जैसे कई मुद्दों को प्रस्तुत किया। धूमिल की कविताओं में ग्रामीण क्षेत्रों और शहरों, कविता और राजनीति, समाजवाद और समाजवाद, न्याय और अन्याय, अहिंसा और हिंसा, ईमानदारी और बेईमानी, जीवंतता और निराशा को दर्शाया गया है। मेहनतकश आदमी और 'परजीवी' का सामना करके, वह अंधेरे व्यवस्था की असंगति को रेखांकित करना चाहता है, जिससे सही आदमी असफल हो जाता है और गलत आदमी सफल और समृद्ध हो जाता है। धूमिल इस विसंगति का कड़ा विरोध करते हैं। उनका कहना है कि मानव चेतना मनुष्य को सही तर्क और जीवन जीने का तरीका देती है।

परिचय:

धूमिल ने जो कुछ लिखा है उसका पूरा लेखा–जोखा 'मोचिराम' कविता में है। उनके काव्य में आक्रोश और आक्रोश झलकता है। कवि धूमिल की बातों में आम आदमी का गुस्सा घुल जाता है और शब्दों का रूप धारण कर कविताओं के माध्यम से कागज पर उतर आता है। धूमिल को जीवन भर व्यवस्थित अध्ययन की कमी का सामना करना पड़ा, जिसने उन्हें महिलाओं के मजाक से छुटकारा पाने या ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पसंद के दक्षिणपंथी दृष्टिकोण को स्वीकार करने की अनुमति नहीं दी। 'क्रांतिकारी' बौद्धिक नौटंकी में गहरी अविश्वास व्यक्त करने के लिए खाने–पीने वालों को सामान्यीकरण और 'दिशाहीन अंधे क्रोध के लिए इनाम' के गंभीर आरोपों का सामना करना पड़ा। वह अक्सर पूछते थे, 'जो लोग कठिनाइयों और संघर्षों से प्रभावित नहीं हैं, वे क्रांतिकारी कैसे बन सकते हैं?

कवि धूमिल का मानना था कि एक दिन लालची/अपराधियों का संयुक्त परिवार थोड़े सुविधा वाले' का अंत हो जाएगा और इसी विश्वास के बल पर उन्होंने 'अराजक' होने की बात स्वीकार करते हुए भी निष्ठा नहीं दिखाई। कविता में निषिद्ध क्षेत्र खोजने के लिए और धोखेबाज व्यवस्था द्वारा पोषित हर परंपरा, सभ्यता, लालित्य, शालीनता और सभ्यता के अनुकूल होने के लिए, आक्रामक धूमिल ने अपना छायादार उपनाम भी रखा। बहुत कम उम्र में ही धूमिल हिंदी आलोचना की परंपरा को कविता की ओर मुड़ने में सफल हो गए थे।

कुछ लोगों का आरोप है कि उन्होंने नामवर पर बलि के बकरे की तरह काम किया, लेकिन मैं कहूँगा कि उन्हें नामवर के खिलाफ कुछ भी सुनना पसंद नहीं था। असल बात तो यह है कि जब उसे लगता था कि वह नाम का इस्तेमाल कर रहा है तो वह उसे छोड़कर जो मन में आता था उसे सुन लेता था।

धूमिल के जीवन काल में उनका एकमात्र कविता संग्रह 1972 में प्रकाशित हुआ था – 'संसद से सड़क तक'। उनकी मृत्यु के कई वर्षों बाद, 'कल सुनना मुझे' प्रकाशित हुई और उन्हें मरणोपरांत 1979 में प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बाद में, उनका एक और संग्रह, सुदामा पांडे का प्रजातंत्र, प्रकाशित हुआ।

उनकी सबसे लोकप्रिय कविता में समाज में व्याप्त समस्या की तस्वीर देखी जा सकती है। वे लिखते हैं कि–

'एक आदमी रोटी बेलता है,
एक आदमी रोटी खाता है,
एक तीसरा आदमी भी है,
जो न रोटी बेलता है,न रोटी खाता है,
वह सिर्फ रोटी से खेलता है।
मैं पूछता हूँ ?
यह तीसरा आदमी कौन है,
और मेरे देश की संसद मौन है।'

तो अब जबकि संसद की चुप्पी केवल कुछ और दशकों के लिए बढ़ी है, भारत की जन–विरोधी राजनीति का असली विरोधाभास, जो न तो वैकल्पिक है और न ही विपक्ष, वाली कविता में है। वह उस समय के समाज का सतर्क प्रहरी है। उनकी कविताओं में लोकतंत्र की रक्षा करने का जुनून है। वे उस समय की सत्ता के विरुद्ध विसंगति को रेखांकित करना चाहते हैं।

हिन्दी साहित्य के अनेक आलोचक इस बात से सहमत हैं कि धूमिल मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय के बाद तीसरे महान कवि हैं जिन्होंने अपने जटिल काल के ताले खोले हैं, बम मुक्तिबोध में कहीं दबे हुए हैं और रघुवीर सहाय की धूमिल तक पहुँचते दिख रहे हैं। कविता, यह फट गया।

एक बार फिर यह समझना जरूरी है कि धूमिल सामाजिक हित के कवि हैं। कुछ ताकतों को याद है कि कवि और कवयित्री दोनों में जबरदस्त बेचौनीएँ है। धूमिल सही मायने में एक जन कवि हैं। पार्लियामेंट से रोड तक उनकी कविताएं इस बात की गवाही देती हैं कि धूमिल न केवल भावनाओं के कवि हैं, बल्कि उन्हें भावना से विचार की यात्रा करना भी पसंद है। संसद से सड़कों तक शायरी पाठक को न केवल भावनात्मक रूप से छूती है, बल्कि बौद्धिक स्तर पर उन्हें प्रेरित भी करती है। धूमिल की कविता 'जनतंत्र के सूर्योदय' में जिस तरह से भारतीय राजनीति में लोकतंत्र का चरित्र सामने आया है, वह हैरान करने वाला है। उनकी कविताओं में आज के समय के कई महत्वपूर्ण लेकिन अनुत्तरित प्रश्न हैं।

हर लेखक और कवि जानता है कि खुद को जानना कितना मुश्किल है, लेकिन मोची राम, रामकमल चौधरी, अकाल दर्शन, गांव, प्रौढ़ शिक्षा जैसी कई कविताएँ धूमिल के गहरे आत्मविश्वास को दर्शाती हैं। कहने की जरूरत नहीं है, धूमिल एक कवि के रूप में अविस्मरणीय है, उनके काव्य जो आवेग, धैर्य, ईमानदारी और रचनात्मक क्रोध, सामाजिक ढाँचे और अर्थहीन कविता के साथ संघर्ष करती है।

सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' के पाठ और शिल्प कौशल को देखते हुए, उनकी समकालीन चिंता, अज्ञानी गंध, स्वभावहीन ईमानदार व्यक्ति की एक अनूठी झलक है। इस अर्थ में उनकी काव्य भाषा सामाजिक संरचना की वैधता को चुनौती देती है। उनके लिए, कविता भाषा का आदमी होने का गुण है। उनका मत है कि एक आदर्श कविता एक सार्थक कथन है। वे भाषा के रिसाव की परंपरा का पालन करके भाषा के भ्रम को तोड़ना चाहते हैं। उन्हें जनता की चमचमाती भाषा में कविता लिखना पसंद है। वे कहते हैं कि आज महत्व कला का नहीं है, पाठ का है, उनका सवाल यह नहीं है कि आपने कैसे बोला, आपने क्या कहा।

अपनी कविताओं के माध्यम से आकाश को छूते ही धूमिल अपनी मिट्टी के दर्द को नहीं भूलते। उन्हें संसद के साथ अपने खेत बांध, सीमा रेखा, नीम का पेड़, कौवे की कर्कशता, तीर्थयात्रियों की आंखों पर माँ का चेहरा, लड़की की आँखें और एक शावक की मौत याद है। 70 के दशक में धूमिल ने जिस व्यवस्था पर सवाल उठाए थे, वह आज भी लागू है. ऐसा ही एक सवाल पेश करते हुए धूमिल कहते हैं–

'वह कौन–सा प्रजातांत्रिक नुस्खा है,
कि जिसमें मेरी माँ का चेहरा
झुर्रियों का झोला है,
और ठीक उसी उम्र की,
मेरे पड़ोस की महिला के चेहरे पर
मेरी प्रेमिका के चेहरे–सा
लोच है।'

उनके काव्य बिंब अपने परवर्ती कवियों से नितांत पृथक हैं। समाज के संपन्न वर्ग के बारे में धूमिल कहते हैं कि–

'जिसके पास थाली है
हर भूखा आदमी
उसके लिए,सबसे भद्दी
गाली है।'

यदि किसी लेखक के योगदान को भुला दिया जाता है, तो उसकी रचनाओं की समीक्षा की जानी चाहिए, लेकिन 'धूमिल' जैसे कवि, जिनकी रचनाएँ देश भर के पाठ्यक्रम में पढ़ायी जाती हैं, जिन्होंने 125 से अधिक शोध किए हैं, और जिनकी तर्ज पर 'महान लेखक' और 'महान लेखक' की घोषणा की है। वरिष्ठ आलोचक 'अपनी दूकानें चला रहे हैं। ऐसे में उन्हें ग्रे साहित्य का मुख्य प्रवक्ता माना जाना चाहिए, और उनके जन्मदिन को मनाने और निपटाने के लिए आयोजित नहीं किया जाना चाहिए। उन्हें न्याय दिलाने के लिए उनके साहित्य की प्रासंगिकता को समझना होगा। धूमिल आजादी के बाद के कवि हैं, जब आजादी से मोहभंग की प्रक्रिया अपने चरम पर पहुँच गई थी।

नामदेव ढसाल दलित आंदोलन के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। वह दलित पैंथर्स के संस्थापक अध्यक्ष थे, जो एक आक्रामक संगठन था जिसने महाराष्ट्र के साथ–साथ देश की राजनीति को भी हिला कर रख दिया था। उन्होंने 1972 में दलित आंदोलन के अपने साथियों और लेखकों के साथ पैंथर की स्थापना की। अमेरिका में 'ब्लैक पैंथर' आंदोलन से प्रेरित होकर इस संगठन ने दलित आंदोलन को एक आक्रामक चेहरा दिया। दलितों के कई मुद्दों पर हिंसक आंदोलन. तत्कालीन सरकारों को दलित समर्थक रुख अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ा। ढसाल ने उस समय के हर आंदोलन में हिस्सा लिया।

आखिरकार, आंदोलन अलग हो गया। कई नेताओं ने अपनी–अपनी पार्टियाँ बनाईं। हालांकि, दलित पैंथर के साथ ढसाल का रिश्ता अंत तक चला। नामदेव ढसाल ने गोलपीठा, खेल, तुही यत्ता कंची, में मरले सूर्य रथाचे घोडे सात, प्रियदर्शनी जैसी कुल नौ कविताएं लिखीं। उन्होंने दो उपन्यास लिखे, हंडकी हडवळा और नेगेटिव स्पेस। दलित पैंथर – ए स्ट्रगल एक वैचारिक किताब है। उन्होंने आंधळे शतक नाटक भी लिखा था। उनका लेखन एक ज्वलंत अनुभव और एक वास्तविकता थी। जो आम गोरे आदमी, उसकी कल्पना से कोसों दूर था।

बाबासाहेब अम्बेडकर के व्यक्तित्व ने पूरी दलित पहचान को बदल दिया था और नामदेव ढसाळ को कविता लिखने के लिए प्रेरित किया गया था और हालांकि उन्हें यह नहीं पता था कि उन्होंने किस मराठी–भारतीय–विदेशी कवि को पढ़ा, 'गोलपीठा' मराठी में हिरोशिमा–नागासाकी विस्फोट की तरह सामने आया। और मराठी कविता हमेशा के लिए बदल गई।

हिन्दी में मुक्तिबोध की 'चाँद का मुह टेड़ा है' और रघुवीर सहाय की 'अगेंस्ट सुसाइड' की तुलना की जा सकती है। नामदेव ढसाळ की कविता ने, उनके महान पूर्वज नामदेव की तरह, मराठी कविता और अन्य शैलियों को बदल दिया, उनके दलित भाइयों को अभूतपूर्व नेतृत्व, आत्मविश्वास, साहस और सम्मान के साथ समृद्ध किया।

उन्होंने गैर–दलित साहित्यिक संस्थानों को उनकी तरह कविता को समकालीन मराठी की मुख्यधारा के रूप में स्वीकार करने के लिए मजबूर किया। बाईस सर्वश्रेष्ठ दलित कवि, कथाकार, नाटककार और आलोचक उनसे प्रेरित थे और हैं। नामदेव ढसाळ अपने जीवनकाल में ही ऐसी क्लासिक बन गए कि इसका महत्व मराठी

से भी आगे बढ़ गया। नामदेव ढसाल उस प्रतिष्ठा और अपरिहार्य मान्यता के केंद्र में हैं जिसे भारतीय दलित साहित्य ने न केवल देश में बल्कि विश्व स्तर पर भी हासिल किया है।

नामदेव ढसाल के जीवन के अंतिम कई वर्षों से वे मायस्थेनिया ग्रेविस नामक एक पुरानी बीमारी से पीड़ित थे। वह बीमारी से जूझ रहे थे। बाद में उन्हें कैंसर का पता चला। उनकी तबीयत बिगड़ने के कारण 13 जनवरी 2014 को उन्हें मुंबई के बॉम्बे अस्पताल में भर्ती कराया गया था। वहां उनका गहन चिकित्सा इकाई में इलाज किया गया। डॉक्टरों की ओर से उनकी हालत में सुधार के प्रयास किए जा रहे थे। लेकिन 15 जनवरी 2014 को उनका निधन हो गया।

निष्कर्ष:

धूमिल और नामदेव ढसाळ की कविता और उनके जीवन में जो अराजकता दिखाई देती है, वह वास्तव में इस व्यवस्था को दलाल करने वाले दलालों के प्रति तीव्र आक्रोश का परिणाम है। धूमिल और नामदेव ढसाळ इस दुनिया को, विशेष रूप से इस देश को, समृद्ध, सुखी और शोषण से मुक्त देखना चाहते हैं, इसलिए उनका गुस्सा तेज हो जाता है। यह कहा जा सकता है कि उनकी आक्रामक अराजकता ही उनकी कविता की ताकत है।

वस्तुतः उनका काव्य नये चित्रात्मक कथनों और नये सन्दर्भों का मिश्रण है। हिन्दी कविता को एक नया स्वर देने वाली जनकवि धूमिल का योगदान अविस्मरणीय है।

हालांकि धूमिल और नामदेव ढसाळ की जिद शिल्प कौशल से ज्यादा पाठ पर है। क्योंकि वह वास्तविकता को उसके मूल या नग्न रूप में प्रस्तुत करना चाहता है। यही प्रवृत्ति उनके काव्य के माध्यम से सामाजिक चेतना का संचार करती है, क्योंकि उनकी कलाकृतियाँ ही उनकी विषयवस्तु की वाहक होती हैं।

संदर्भ:

1. दयानंद तिवारी ''धूमिल' का काव्य संसार–भाषा और शिल्प की नई जमीन', हिन्दी भाषा, २०२१
2. सतीश चाफेकर 'विद्रोही कवि–पद्मश्री नामदेव ढसाळ',